Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)
© VIJACT |Vol.2, Issue4, Apr. 2026, pp. 51-57 | ISSN: 3139-1656 (Online)
DOI: https://doi.org/10.65785/vijact.v2i4.38
Available online at: https://vijact.com/

परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

सोनी वर्मा [1] एवं डॉ. देवेन्द्र कुमार यादव [2]

[1] एम.ए., शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
[2] सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Article Info

Article history:

Received Apr 19, 2026

Accepted Apr 27, 2026

Published Apr 30, 2026

Keywords:

शोध अभिवृत्ति

परास्नातक विद्यार्थी

अनुसंधान

उच्च शिक्षा

शोध प्रशिक्षण

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति विषय पर आधारित है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। इसके अतिरिक्त जेंडर तथा विषय-वर्ग (एम.ए. एवं एम.एड.) के आधार पर विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रतिदर्श के रूप में 80 विद्यार्थियों का चयन किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन, t-परीक्षण एवं मान-व्हिटनी U-परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि एम.ए. एवं एम.एड. विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। अधिकांश विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तर की पाई गई।

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

Corresponding Author:
सोनी वर्मा
Email: vermasoni0703@gmail.com

1. Introduction

शोध मानव जीवन की बौद्धिक प्रगति का आधार है। मानव सदैव से अपने आसपास की घटनाओं, समस्याओं तथा तथ्यों को जानने और समझने का प्रयास करता रहा है। यही जिज्ञासा शोध का मूल आधार है। शोध केवल नए तथ्यों की खोज तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ज्ञान को व्यवस्थित, वैज्ञानिक एवं तार्किक ढंग से प्रस्तुत करने की प्रक्रिया भी है। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में शोध का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। उच्च शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि अनुसंधान की प्रक्रिया से भी परिचित कराया जाता है ताकि वे समस्याओं का वैज्ञानिक समाधान खोज सकें। परास्नातक स्तर पर शोध कार्य विद्यार्थियों के बौद्धिक एवं व्यावसायिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शोध के माध्यम से विद्यार्थियों में तार्किक चिंतन, विश्लेषण क्षमता, समस्या समाधान क्षमता तथा नवीन ज्ञान के प्रति रुचि विकसित होती है। यदि विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक होती है, तो वे शोध कार्य में अधिक रुचि लेते हैं तथा बेहतर अनुसंधान कर पाते हैं। इसके विपरीत नकारात्मक अभिवृत्ति शोध कार्य में बाधा उत्पन्न करती है। आज के समय में विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में शोध कार्य को विशेष महत्व दिया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा देने पर विशेष बल दिया गया है। इसके बावजूद अनेक विद्यार्थी शोध को कठिन, समय लेने वाला एवं जटिल कार्य मानते हैं। इसलिए यह जानना

आवश्यक हो जाता है कि परास्नातक विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति कैसी है तथा किन कारकों से प्रभावित होती है। प्रस्तुत अध्ययन में परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में जेंडर तथा विषय-वर्ग (एम.ए. एवं एम.एड.) के आधार पर विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

2. संबंधित साहित्य समीक्षा

गिरी, बंगाल एवं फाल्के (2014) ने मेडिकल परास्नातक छात्रों के शोध के प्रति ज्ञान, दृष्टिकोण एवं व्यवहार का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश छात्र शोध के महत्व को मानते थे, लेकिन समय और सुविधाओं की कमी प्रमुख बाधाएँ थीं।

शर्मा एट. अल. (2014) ने बेंगलुरु के डेंटल पीजी छात्रों के शोध संबंधी ज्ञान, दृष्टिकोण एवं व्यवहार का अध्ययन किया। निष्कर्ष में छात्रों का शोध के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया, जबकि वित्तीय एवं तकनीकी संसाधनों की कमी मुख्य समस्या रही।

शौकत एट. अल. (2014) ने स्नातकोत्तर छात्रों के शोध के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि पुरुष छात्रों का दृष्टिकोण महिलाओं की अपेक्षा अधिक सकारात्मक था तथा आयु एवं विश्वविद्यालय के प्रकार के आधार पर भी अंतर पाया गया।

भगवथुला एट. अल. (2017) ने मेडिकल एवं फार्मेसी छात्रों के शोध गतिविधियों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया। अध्ययन में समय की कमी, फंडिंग की कमी एवं प्रोत्साहन के अभाव को प्रमुख बाधाओं के रूप में पाया गया।

एच. के., ए., बी. एस. एवं एसएच (2017) ने मेडिकल परास्नातक छात्रों के बीच अनुसंधान के प्रति ज्ञान, दृष्टिकोण एवं बाधाओं का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि सभी छात्रों ने शोध को करियर के लिए उपयोगी माना, लेकिन शोध कौशल एवं ज्ञान की कमी प्रमुख बाधा रही।

3. अध्ययन का औचित्य

वर्तमान समय में उच्च शिक्षा में शोध कार्यों का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी अनुसंधान एवं नवाचार पर विशेष बल दिया गया है। इसके बावजूद अनेक विद्यार्थी शोध कार्य को कठिन एवं जटिल मानते हैं। शोध पद्धति की अपर्याप्त समझ, संसाधनों की कमी एवं उचित मार्गदर्शन का अभाव उनकी शोध अभिवृत्ति को प्रभावित करता है। इसलिए यह जानना आवश्यक है कि परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति कैसी है। प्रस्तुत अध्ययन शोध संस्कृति के विकास एवं विद्यार्थियों में सकारात्मक शोध दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक सिद्ध होगा।

4. समस्या कथन-

परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

5. अध्ययन के उद्देश्य

1. पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. एम.ए. एवं एम.एड. विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति के स्तर (उच्च, औसत एवं निम्न) का अध्ययन करना।

6. परिकल्पनाएँ

H_{01} पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{02} एम.ए. एवं एम.एड. विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

7.शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। इस विधि के माध्यम से विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया।

7.1 जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या में लखनऊ जनपद के लखनऊ विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के परास्नातक स्तर के विद्यार्थी सम्मिलित किए गए।

7.2 प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्शन प्रविधि

इस शोध अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि का उपयोग करते हुए लखनऊ जनपद के लखनऊ विश्वविद्यालय के परास्नातक स्तर (एम. ए. और एम. एड.) में अध्ययन करने वाले 80 विद्यार्थियों को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया।

7.3 शोध उपकरण

इस शोध मे शोधकर्ता ने परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति का आंकलन करने हेतु पांच बिंदु लिकर्ट स्केल पर आधारित 42 कथनों से युक्त मानकीकृत सूद एवं शर्मा (2012) "अनुसंधान के प्रति अभिवृत्ति मापनी" का उपयोग किया गया है।

7.4 आंकड़ों का संकलन

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संग्रहण की प्रक्रिया को व्यवस्थित, वैज्ञानिक एवं निष्पक्ष रूप से संपन्न किया गया। सर्वप्रथम शोधकर्ता द्वारा के लखनऊ विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग से औपचारिक अनुमति प्राप्त की गई, जिससे अध्ययन हेतु आवश्यक सहयोग सुनिश्चित किया जा सके। अनुमति प्राप्त होने के पश्चात् शोधकर्ता ने विभाग में अध्ययनरत एम.ए. एवं एम. एड. के परास्नातक विद्यार्थियों से व्यक्तिगत रूप से संपर्क स्थापित किया।

विद्यार्थियों को अध्ययन के उद्देश्य, उसकी उपयोगिता एवं प्रक्रिया के बारे में सरल एवं स्पष्ट भाषा में जानकारी प्रदान की गई, ताकि वे बिना किसी संकोच के अपनी वास्तविक अभिवृत्ति व्यक्त कर सकें। इसके पश्चात् डेटा संग्रहण के लिए सूद एवं शर्मा द्वारा विकसित मानकीकृत "शोध अभिवृत्ति मापनी" को पेपर-फॉर्म के रूप में विद्यार्थियों को वितरित किया गया। प्रश्नावली देने से पूर्व विद्यार्थियों को स्पष्ट निर्देश दिए गए कि वे प्रत्येक कथन को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपने विचारों के अनुसार उचित विकल्प का चयन करें।

शोधकर्ता स्वयं प्रश्नावली भरते समय उपस्थित रहा, जिससे यदि किसी विद्यार्थी को किसी कथन को समझने में कठिनाई हो तो उसे तुरंत सहायता प्रदान की जा सके। साथ ही, यह सुनिश्चित किया गया कि उत्तरदाताओं पर किसी प्रकार का बाहरी प्रभाव या दबाव न पड़े, जिससे उनके उत्तरों की निष्पक्षता बनी रहे। विद्यार्थियों को पर्याप्त समय दिया गया ताकि वे सोच-समझकर सही उत्तर दे सकें। सभी प्रश्नावलियों को पूर्ण होने के पश्चात् उसी समय एकत्र कर लिया गया।

7.5 आंकड़ों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय प्रविधियाँ-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा सांख्यिकीय प्रविधियों के अंतर्गत माध्य, मानक विचलन, मान-व्हिटनी U-परीक्षण, स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण, Z- परीक्षण का उपयोग किया गया है।

8.आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या-

शोध उद्देश्य–1:परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों का जेंडर के आधार पर शोध के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

H_{01}: महिला एवं पुरुष विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन के प्रथम उद्देश्य "परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों का जेंडर के आधार पर कोई सार्थक अंतर नही है" के लिए प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मान-व्हिटनी यू परीक्षण का उपयोग किया गया जिसके परिणाम को निम्न तालिका संख्या 1 में प्रस्तुत किया गया है।

महिला एवं पुरुष विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति के अंतर हेतु तालिका

जेंडर	संख्या	औसत रैंक	रैंकों का योग	U- मान	Z- मान	p- मान
पुरुष	16	43.59	697.50	462.500	0.596	0.551
महिला	64	39.73	2542.50			

तालिका संख्या- 1

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शोध के प्रति पुरुष विद्यार्थियों का औसत रैंक 43.59 एवं महिला विद्यार्थियों का औसत रैंक 39.73 है। साथ ही रैंकों का कुल योग पुरुष विद्यार्थियों के लिए 697.50 तथा महिला विद्यार्थियों के लिए 2542.50 प्राप्त हुआ है। मान-व्हिटनी U परीक्षण का मान 462.50, Z का मान ,0.5 तथा p- मान 0.551 है, जो सर्थकता स्तर 0.05 से अधिक है। अतः इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि परास्नातक स्तर के पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति मे सांखियकीय रूप से कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना "महिला एवं पुरुष विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है" स्वीकार की जाती है। वर्तमान अध्ययन के निष्कर्ष पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों से भी समर्थित होते हैं। **कुमार(2019)** ने अपनी पुस्तक अनुसंधान पद्धति: शुरुआती लोगों के लिए चरण-दर-चरण मार्गदर्शिका में स्पष्ट किया है कि विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति मुख्यतः शैक्षिक वातावरण, अनुसंधान अनुभव एवं प्रेरणा पर आधारित होती है, न कि केवल जेंडर पर। पापनास्तासियो अध्ययन से भी मेल खाता है। उनके अनुसार विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति में जेंडर के आधार पर विशेष अंतर नहीं पाया जाता, बल्कि शोध अनुभव एवं शैक्षिक वातावरण अधिक प्रभाव डालते हैं।

शोध उद्देश्य – 2 : परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों का एम. ए. और एम. एड.के आधार पर शोध के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

H_{02} : एम.ए. और एम. एड. के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के मध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोध अध्ययन के द्वितीय उद्देश्य " परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों का एम. ए. और एम. एड. के आधार पर शोध के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना" के लिए परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों से प्राप्त आंकड़ों को उनके विषय-वर्ग (एम. ए. एवं एम. एड.) के आधार पर व्यवस्थित करके स्वतंत्र नमूनों t-परीक्षण सांख्यिकी की सभी अवधारणाओं की जाँच की गई। इस सांख्यिकी प्रविधि से जुड़ी सभी अवधारणाओं के संतुष्ट हो जाने के बाद स्वतंत्र न्यायदर्श t-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि की सहायता से आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। स्वतंत्र न्यायदर्श t-परीक्षण सांख्यिकी के परिणाम का विवरण तालिका संख्या 2 में प्रस्तुत किया गया है।

एम. ए. एवं एम. एड. वर्ग के विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति का माध्य, ,मानक विचलन, t- मान, p-मान हेतु तालिका

विषय वर्ग	संख्या (N)	माध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रांश (df)	t- मान	p- मान
एम. ए.	46	146.26	15.93	78	4.954	. 000
एम. एड.	34	163.97	15.62			

तालिका संख्या-2

सार्थकता स्तर 0.05

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि एम. ए. के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का माध्य 146.26 तथा मानक विचलन 15.93है, जबकि एम. एड. के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का माध्य 163.97 तथा मानक विचलन 15.62 है। दोनों समूहों के मध्य मात्र 15.71 अंकों का अंतर परिलक्षित होता है, जो तुलनात्मक रूप से नगण्य नहीं है। शोध के प्रति एम. ए. एवं एम. एड के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का परिकलित स्वतंत्र न्यायदर्श t-परीक्षण का मान 4.954 है, जिसका स्वतंत्रांश 78 पर p-मान 0.00 है। यह मान 0.05 सार्थकता स्तर के मान

से कम है, इसलिए 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना एम. ए. एवं एम. एड. के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर होगा, निरस्त की जा सकती। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि एम. एड. के विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति एम. ए. के विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति की तुलना मे अधिक सकारात्मक है। यह परिलक्षित होता है कि एम.ए. और एम.एड. के छात्रों की शोध अभिवृत्ति में अंतर मुख्यतः शोध प्रशिक्षण, व्यावहारिक अनुभव, और व्यावसायिक आवश्यकताओं के कारण होता है।यह निष्कर्ष पूर्ववर्ती अध्ययनों के समान है। **कोठारी के अनुसार**, जिन विद्यार्थियों को शोध का अधिक प्रशिक्षण एवं व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होता है, उनकी शोध के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक होती है। एम. एड. पाठ्यक्रम में शोध कार्य अनिवार्य होता है, जिससे उनकी अभिवृत्ति विकसित होती है। **बेस्ट एवं कहन(2006)** ने भी बताया कि व्यावसायिक एवं प्रशिक्षण-आधारित कार्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शोध के प्रति अधिक रुचि एवं सकारात्मक दृष्टिकोण पाया जाता है। **क्रिसवेल (2012)** के अनुसार, शोध प्रशिक्षण विद्यार्थियों की सोच, विश्लेषण क्षमता और अनुसंधान के प्रति दृष्टिकोण को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

शोध उद्देश्य – 3 : परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों का शोध के प्रति उच्च एवं निम्न अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों का शोध के प्रति अभिवृत्ति हेतु तालिका

स्तर	बारंबारता	प्रतिशत
उच्च स्तर	16	20%
औसत स्तर	53	66%
निम्न स्तर	11	13.8%

तालिका संख्या-3

प्रस्तुत सारणी के अध्ययन से यह दृष्टिगत है कि परास्नातक स्तर के 20% विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति उच्च स्तर की है। और 66.3% औसत स्तरीय अभिवृत्ति परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों में है। और 13.8% विद्यार्थियों में शोध के प्रति अभिवृत्ति निम्न स्तर की है। प्रस्तुत शोध परिणाम मे परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों का शोध के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तर की अभिवृत्ति है। यह निष्कर्ष पूर्ववर्ती अध्ययनों से भी मेल खाता है। **पापानास्तासियौ (2005)** ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों में शोध के प्रति अभिवृत्ति सामान्यतः मध्यम स्तर की होती है और यह उनकी शोध संबंधी समझ, अनुभव तथा प्रशिक्षण पर निर्भर करती है। जिन विद्यार्थियों को शोध पद्धति का उचित ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होता है, उनकी अभिवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक होती है। **कुमार (2019)** के अनुसार, शोध के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण, मार्गदर्शन तथा प्रेरणा पर निर्भर करता है। यदि छात्रों को शोध कार्य में सक्रिय भागीदारी और उचित मार्गदर्शन मिले, तो उनकी अभिवृत्ति उच्च स्तर की हो सकती है, अन्यथा यह औसत स्तर पर बनी रहती है। इसके अतिरिक्त, शर्मा (2018) के अध्ययन में भी यह पाया गया कि अधिकांश परास्नातक विद्यार्थी शोध को आवश्यक तो मानते हैं, परन्तु समय, संसाधन और जटिलता के कारण उनकी अभिवृत्ति औसत स्तर पर ही सीमित रहती है।

9.शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन "परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति" पर आधारित था। अध्ययन के अंतर्गत प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि परास्नातक स्तर के अधिकांश विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तर की है। इससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी शोध कार्यों के महत्व को समझते हैं, किन्तु उनमें शोध के प्रति अत्यधिक उत्साह एवं सक्रियता का अभी पर्याप्त विकास नहीं हो पाया है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसका अर्थ यह है कि जेंडर विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति को विशेष रूप से प्रभावित नहीं करता। दोनों ही वर्गों के विद्यार्थी शोध कार्यों के प्रति लगभग समान दृष्टिकोण रखते हैं।

अध्ययन के परिणामों से यह भी ज्ञात हुआ कि एम.ए. एवं एम.एड. विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। एम.एड. विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक पाई गई। इसका प्रमुख कारण यह हो सकता है कि एम.एड. पाठ्यक्रम में शोध कार्य, शोध प्रबंध एवं अनुसंधान प्रशिक्षण को अधिक महत्व दिया जाता है, जिससे विद्यार्थियों में शोध संबंधी समझ एवं रुचि का विकास होता है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि उचित मार्गदर्शन, शोध प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता एवं प्रेरणात्मक शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। जिन विद्यार्थियों को शोध कार्यों का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होता है, उनमें अनुसंधान के प्रति अधिक रुचि एवं आत्मविश्वास विकसित होता है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि यदि उच्च शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों को उचित शोध प्रशिक्षण, आवश्यक संसाधन एवं सहयोगात्मक वातावरण प्रदान किया जाए, तो उनकी शोध के प्रति अभिवृत्ति को अधिक सकारात्मक बनाया जा सकता है। इससे उच्च शिक्षा में शोध संस्कृति का विकास होगा तथा विद्यार्थी भविष्य में प्रभावी शोधकर्ता के रूप में उभर सकेंगे।

10. शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर अनेक महत्वपूर्ण शैक्षिक निहितार्थ सामने आते हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश विद्यार्थियों की शोध के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तर की है। इससे यह आवश्यकता अनुभव होती है कि उच्च शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों को शोध के प्रति अधिक जागरूक एवं प्रेरित किया जाए। विद्यार्थियों में शोध संबंधी रुचि विकसित करने के लिए विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में समय-समय पर शोध कार्यशालाओं, संगोष्ठियों एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि शोध प्रशिक्षण विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अतः शिक्षण संस्थानों में शोध पद्धति को अधिक व्यावहारिक एवं गतिविधि आधारित बनाया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक जानकारी देने के स्थान पर उन्हें लघु शोध परियोजनाओं, केस स्टडी एवं फील्ड वर्क से जोड़ा जाना चाहिए, जिससे उनमें अनुसंधान कौशल का विकास हो सके। इसके अतिरिक्त अध्ययन से यह भी संकेत मिलता है कि उचित मार्गदर्शन एवं संसाधनों की उपलब्धता विद्यार्थियों की शोध अभिवृत्ति को बेहतर बना सकती है। इसलिए विश्वविद्यालयों में समृद्ध पुस्तकालय, ई-संसाधन, इंटरनेट सुविधा एवं डिजिटल डेटाबेस उपलब्ध कराए जाने चाहिए। शिक्षकों एवं शोध मार्गदर्शकों को भी विद्यार्थियों के प्रति सहयोगात्मक एवं प्रेरणात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी शोध कार्य को कठिन न मानकर एक रचनात्मक एवं ज्ञानवर्धक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करें। प्रस्तुत अध्ययन उच्च शिक्षा संस्थानों में शोध संस्कृति को मजबूत बनाने में भी सहायक सिद्ध हो सकता है। यदि विद्यार्थियों में प्रारंभिक स्तर से ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अनुसंधानात्मक सोच विकसित की जाए, तो भविष्य में वे उत्कृष्ट शोधकर्ता, शिक्षक एवं नवाचारी नागरिक बन सकेंगे। इस प्रकार यह अध्ययन शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार तथा ज्ञान आधारित समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

Reference

[1]. कुमार, आर. (2019)। *रिसर्च मेथडोलॉजी: ए स्टेप-बाय-स्टेप गाइड फॉर बिगिनर्स (5वाँ संस्करण)*। लंदन: सेज पब्लिकेशन।

[2]. क्रेसवेल, जे. डब्ल्यू. (2012)। *रिसर्च डिज़ाइन: क्वालिटेटिव, क्वांटिटेटिव एंड मिक्स्ड मेथड्स अप्रोचेज (4था संस्करण)*। कैलिफोर्निया: सेज पब्लिकेशन।

[3]. गुड, सी. वी. (1972)। *इंट्रोडक्शन टू एजुकेशनल रिसर्च (द्वितीय संस्करण)*। न्यूयॉर्क: एपलटन सेंचुरी क्रॉफ्ट्स।

[4]. गिरि, पी. ए., बंगाल, वी. बी., एवं फाल्के, डी. बी. (2014)। मध्य भारत विश्वविद्यालय के प्रवारा आयुर्वेद विज्ञान संस्थान के स्नातकोत्तर छात्रों में चिकित्सा अनुसंधान के प्रति ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार। *जे फैमिली मेड प्राइम केयर*, 3(1), 22-24। https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/24791231/

[5]. गैरेट, एच. ई. (1966)। स्टैटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एंड एजुकेशन (6th ed.)। लंदन। https://openlibrary.org/books/OL13643348M/Statistics_in_psychology_and_education

[6]. पापनास्तासियौ, ई. सी. (2005)। शोध के प्रति अभिवृत्ति मापनी का कारक विश्लेषण। *स्टैटिस्टिक्स एजुकेशन रिसर्च जर्नल*, 4(1), 16–26। https://doi.org/10.52041/serj.v4i1.523

[7]. बेस्ट, जे. डब्ल्यू., एवं कहन, जे. वी. (2006)। *रिसर्च इन एजुकेशन (10वाँ संस्करण)*। नई दिल्ली: पियर्सन एजुकेशन।

[8]. बॉर्ग, डब्ल्यू. आर., एवं गॉल, एम. डी. (1983)। एजुकेशनल रिसर्च: एन इंट्रोडक्शन (4था संस्करण)। न्यूयॉर्क: लॉन्गमैन।

[9]. बोप्पना, जे., कुमार, वी., एवं पटेल, जे. बी. (2019)। स्नातकोत्तर छात्रों की शोध के प्रति अभिवृत्ति। *गुजरात जर्नल ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन*, 30(1), 87-89।

[10]. बुच, एम. बी. (1991)। फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन (1983–1988)। नई दिल्ली।

[11]. https://osre.ncert.gov.in/survey/6/Fourth_Survey

[12]. भागवथुला, ए. एस., और अन्य.(2017)। चिकित्सा एवं फार्मेसी छात्रों का अनुसंधान गतिविधियों के प्रति दृष्टिकोण: एक बहुकेंद्रीय दृष्टिकोण। *MDPI*, 5(4):55,2-10।

[13]. https://doi.org/10.3390/pharmacy5040055

[14]. भारत सरकार। (2020)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

[15]. मिश्र, आर. सी. (2020)। *शोध पद्धतियाँ और सांख्यिकी*। एम. पी. डी. डी., उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी।

[16]. मंगल, एस. के. (2019). *शिक्षा तकनीकी*। दिल्ली: पी. एच. आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।

[17]. मंगल, एस. के. (2022). *व्यावहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियाँ*। दिल्ली: पी. एच. आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।

[18]. यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन. (2020)। *गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा एवं शोध हेतु दिशा-निर्देश*। University Grants Commission. https://www.ugc.gov.in

[19]. सूद, वी., एवं शर्मा, एस. (2012)। *अनुसंधान के प्रति अभिवृत्ति मापनी*। आगरा: राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक।

[20]. शशिराज, एच. के., और अन्य.(2017)। मेडिकल स्नातकोत्तर छात्रों के बीच अनुसंधान के प्रति दृष्टिकोण, ज्ञान और बाधाओं पर एक अनुप्रस्थ अध्ययन। *इंडियन जर्नल ऑफ क्लिनिकल एनाटॉमी एंड फिजियोलॉजी*, 4(4), 422–426। https://www.academia.edu/35628817

[21]. शर्मा, एस. (2018). *उच्च शिक्षा में शोध अभिवृत्ति का अध्ययन*। नई दिल्ली: ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन

[22]. शर्मा, एन., और अन्य. (2014)। भारत के बेंगलुरु शहर में दंत चिकित्सा संस्थानों में स्नातकोत्तर छात्रों के बीच अनुसंधान के संबंध में ज्ञान, दृष्टिकोण और अभ्यास। *जर्नल ऑफ इंडियन एसोसिएशन ऑफ पब्लिक हेल्थ डेंटिस्ट्री*,12(3),189–193।

[23]. https://journals.lww.com

[24]. शशिराज, एच. के., और अन्य.(2017)। मेडिकल स्नातकोत्तर छात्रों के बीच अनुसंधान के प्रति दृष्टिकोण, ज्ञान और बाधाओं पर एक अनुप्रस्थ अध्ययन। *इंडियन जर्नल ऑफ क्लिनिकल एनाटॉमी एंड फिजियोलॉजी*, 4(4), 422–426।

[25]. https://www.academia.edu/35628817

Cite this Article:

Anshika Mishra and Ms Nitika Gulati, "Dimensions of Familial Care in Firdaus Kanga's Trying to Grow ", Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT), ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 4, pp. 51-57, April 2026.
Journal URL: https://vijact.com

DOI: *https://doi.org/10.65785/vijact.v2i4.38*